Subject - Philosophy
Class:- B.A, Part-III (Hons)
Paper - V

प्रारम्भिक धर्म (आदिम धर्म)
Primitive religion

प्रारंभिक धर्म अर्थात आदिम धर्म जैसा कि इसके नाम से ही विदित है, प्राचीन काल के व्यक्तियों की धार्मिक भावना को प्रकाशित करता है प्रोफेसर ब्राइटमैन ने प्रारंभिक धर्म के संबंध में यह कहा है। प्रारंभिक शब्द का प्रयोग यह निश्चित करता है मानो यह अत्यंत ही प्राचीन एवं धर्म की पहली अवस्था हो। यह पूर्णत: सत्य नहीं है।

प्रारंभिक धर्म को प्रारंभिक धर्म इसलिए कहा जाता है क्योंकि दूसरा शब्द इसका चित्र उपस्थित करने में असफल है। दूसरी बात यह है कि प्रारंभिक धर्म प्राचीन काल के ~~व्यक्तियों~~ व्यक्तियों के धार्मिक विचारों

का स्पष्टीकरण है। प्रारंभिक धर्म को जाति - संबंधी धर्म (Tribal religion) भी कहा जाता है। प्रारंभिक धर्म का विकास विभिन्न दलों में हुआ है, इसलिए इस धार्मिक अवस्था को जातीय धर्म (Tribal religion) कहा जाता है। उपयुक्त विवेचन से यह प्रमाणित होता है कि आदिम धर्म वह धर्म के जो अति प्राचीन है और जो आज भी अविक-सित अवस्था में दिखता है।

प्रारंभिक धर्म के विभिन्न रूप (Forms of Primitive religion)

प्रारंभिक धर्म पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो धर्म के विभिन्न रूप पाते हैं। प्रारंभिक धर्म के विभिन्न रूपों को व्यक्त करने का प्रयास धर्म-दर्शन में पाते हैं। प्रारंभिक धर्म के मुख्य रूपों में निम्नलिखित रूपों की चर्चा करना परमावश्यक है -

(1) जीववाद (Animism)
(2) प्राणवाद (Spiritism)
(3) फिटिशावाद (Fetishism)

(4) मानावाद (Manaism)
(5) टोटमवाद (Totemism)

जीववाद
(Animism)

टायलर ने जीववादी सिद्धांत की प्रस्थापना अपनी प्रसिद्ध पुस्तक प्रिमिटिव कलचर (Primitive culture) में की है। इस पुस्तक में आदिम मनुष्य की संस्कृति का विवेचन निहित है। आदिम धर्म का प्रथम विकसित धारणा है। जीववाद एनिमिज्म (Animism) शब्द का अनुवाद है। यहाँ 'एनिमा' का अर्थ है जीवन का श्वास, आत्मा है।

जीववाद (Animism) के अनुसार प्रकृति की सारी वस्तुओं में एक जीव निवास करता है। जीववाद का अर्थ है वह विश्वास जिसके आधार पर लोग सभी चीजों में जीव या आत्मा को व्याप्त मानते हैं। जीव या आत्मा के स्वरूप की व्याख्या करते हुए टायलर ने कहा

है कि यह एक प्रकार की छाया है।
("A thin unsubstantial image in its nature a sort of vapour film or Shadow")
जिस प्रकार मानव के पास आत्मा निवास करती है उसी प्रकार विश्व की सारी वस्तुओं में आत्मा सन्निहित है। मानव अपने अनुरूप विश्व की प्रत्येक वस्तु में आत्मा का दर्शन करता है। विश्व की वस्तुएं मानव के हृदय में जिज्ञासा, आश्चर्य तथा भय की भावना का संचार करती है। ~~मानव~~

धर्म के इतिहास में जीववाद का महत्वपूर्ण स्थान है। जीव-वाद ने आत्मा के विचार को जटिल बना कर धर्म के इतिहास में योगदान दिया है। जीववाद की अंतिम महत्ता यह है कि यह आदिम धर्म के विभिन्न प्रकारों का जन्मदाता है। प्राणवाद, फीटिशवाद आदि का विकास जीववाद से हुआ है।

क्या जीववाद को धार्मिक-अवस्था कहा जा सकता है? (Can

Animism be regarded as a religious phase ?.) जीववाद को धार्मिक अवस्था कहना अनुचित जान पड़ता है। एक धर्म में श्रद्धा, आत्मसमर्पण तथा एक शक्तिशाली ~~सत्ता~~ सत्ता पर विश्वास रहता है। परंतु जीववाद में ये सारी बातें नहीं पायी जाती है।

जीववाद में हिंसक जानवरों जैसे साँप, बाघ की पूजा होती है। अत्यधिक भयप्रद जीव को आराधना का विषय मानने के फलस्वरूप इसे धर्म न कहकर दुष्टात्मवाद (Demonology) कहना युक्तिसंगत होता। इसके अतिरिक्त जीववाद में जादू की प्रधानता है। जादू और धर्म एक दूसरे से अलग करना अत्यंत ही कठिन है। इसलिए जीववाद को धर्म न कहकर विश्व संबंधी विचार कहना ठीक जान पड़ता है।

आलोचना

टायलर (Tylor) के अनुसार धर्म की उत्पत्ति जीवनवादी विचार

से हुई है। मानव जीवनवाद में अपने और प्रकृति के विभिन्न जीवों के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करता था। वह शक्तिशाली जीवों की अराधना करता था तथा भयप्रद जीवों से बचने का प्रयास करता था। जीववाद धर्म की उत्पत्ति का कारण नहीं है।

जीववाद में आत्मा का प्रत्यय दिखता है। आत्मा का प्रत्यय एक विकसित प्रत्यय है। इस प्रत्यय की कल्पना आदिम मनुष्य करने में असमर्थ था। जीववाद को आदिम धारणा नहीं कहा जा सकता है।

टायलर के मतानुसार जीववाद धर्म की उत्पत्ति का कारण है। यह धर्म नहीं अपितु ~~एक~~ सचमुच एक धर्म नहीं है बल्कि एक प्रारंभिक दर्शन है जो मानव और प्रकृति की बौद्धिक व्याख्या प्रस्तुत करता है। यदि यह दर्शन है तो इसे धर्म की उत्पत्ति का कारण मानना भ्रामक है।

जीववाद को धर्म की संज्ञा देना संतोषप्रद नहीं है। जीववाद में जीव की सत्ता पर बल दिया गया है। जीवों का अस्तित्व मात्र मान लेने से यह धर्म नहीं हो सकता क्योंकि इससे धार्मिक भावना एवं धार्मिक क्रिया का अभाव है। यदि जीवों में विश्वास को ही धर्म कहा जाता तब दृष्टात्मवाद को भी धर्म की संज्ञा दी जाती क्योंकि दृष्टात्मवाद में भी जीवों का विश्वास किया जाता है।

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara.